भाषा नीति के बारे अंतर्राष्ट्रीय खोज

जोगा सिंह

भाषा नीति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय खोज :

मातृ-भाषा खोलती है शिक्षा, ज्ञान और अंग्रेजी सीखने के दरवाज़े

I. भूमिका

संघीय प्रशासनिक सेवाओं में अंग्रेजी भाषा को पहले से भी ज्यादा महत्त्व दिए जाने और भारतीय भाषाओं का दर्जा और भी कम करने के प्रस्ताव ने भाषा के बारे में बहस को फिर और तीव्र कर दिया है। यह निबन्ध सरकार के इस फैसले के प्रतिक्रम के रूप में लिखा गया था। केन्द्रीय सरकार ने अपना प्रस्ताव तो 15 मार्च 2013 को वापिस ले लिया है पर भारत में भारतीय भाषाओं की दशा अति दर्दनीय ही बनी हुई है। इसलिए यह निबन्ध प्रकाशित किया जा रहा है।

वैसे तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारतीय भाषाओं को वो स्थान नहीं मिला जो हर कारण से उनको मिलना चाहिए था, पर पिछले कोई तीस वर्षो से भारतीय भाषाओं की दुगर्ति की गति और भी तीव्र हो गई है और अंग्रेजी भाषा भारतीय भाषाओं को विस्थापित किए जा रही है, विशेष तौर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में। इसका मूल कारण तो निहित स्वार्थ हैं पर इस नीति के पक्ष में जो तर्क दिए जाते हैं वो कुछ निम्न प्रकार के हैं :

1. अंग्रेजी ज्ञान-विज्ञान की भाषा है और ज्ञान-विज्ञान में प्रगति के लिए अंग्रेजी में पारंगत होना आवश्यक है;

2. अंग्रेजी भाषा एक अतंर्राष्ट्रीय भाषा है और इसके बगैर अंतर्राष्ट्रीय कार-विहार संभव नहीं है।

उपरोक्त प्रकार के तर्क ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, भाषा और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में शत-प्रतिशत अज्ञानता का सबूत हैं। इस लेख का उद्देश्य इस अज्ञानता को बेनकाब करना है।

II. शिक्षा और मातृ भाषा

सबसे पहले वर्तमान समय में विकास के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र ज्ञान-विज्ञान और भाषा के सम्बन्धों के विषय में अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान और तजुर्बे पर नजर डालना उचित होगा। निम्न उक्ति संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के संगठन (यूनेस्को) की पुस्तक 'शिक्षा में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग' से है।

''यह स्वतःसिद्ध है कि बच्चे के लिए शिक्षा का सबसे बढ़िया माध्यम उसकी मातृ भाषा है। मनोवैज्ञानिक आधार पर यह सार्थक चिन्हों की ऐसी प्रणाली है जो प्रकटावे और समझ के लिए उसके दिमाग में स्वयंचालक रूप में काम करती है, सामाजिक आधार पर जिस जनसमूह के सदस्यों से उसका सम्बन्ध होता है उसके साथ एकात्मक होने का साधन है, शैक्षिक आधार पर वह मातृ-भाषा के माध्यम से एक अनजाने माध्यम की अपेक्षा तेज़ी से सीखता है।" (यूनेस्को, 1953:11)

यूनेस्को का यह मत बड़े विस्तृत अध्य्यनों का नतीजा था। इसी तरह यूनेस्को ने 1968 में अपनी पुस्तक में दोहराया :

शिक्षा के लिए ''मातृभाषा का प्रयोग जितनी दूर तक संभव हो किया जाना चाहिए'' (पन्ना 691)।

और संयुक्त राष्ट्र की 2004 की विकास रिपोर्ट में ये दर्ज है : ''फिलीपीन में दो भाषाई शिक्षा नीति की दो भाषाओं (टागालोग और अंग्रेजी) में पारंगत विद्यार्थी उन विद्यार्थियों को पीछे छोड़ देते थे जो घर में टागालोग में बात नहीं करते थे।" (पन्ना 61)

और निम्न पंक्ति तो मुख्यतः अंग्रेजी भाषी देश अमेरिका के बारे में है :

''अमेरिका में जिन नवायो भाषाई बच्चों को प्राथमिक स्तर पर उनकी प्रथम भाषा (नवायो) और उनकी द्वितीय भाषा (अंग्रेजी) दोनों भाषाओं में पढ़ाया गया, उन बच्चों ने नवायो भाषाई उन बच्चों को पीछे छोड़ दिया जिनको केवल अंग्रेजी में पढ़ाया गया।'' (वही) (इस निबन्ध में 'द्वितीय भाषा' और 'विदेशी भाषा' समानार्थक हैं।)

भारतीय अंग्रेजी भक्तों से निवेदन है कि ये जानने का कष्ट करें कि अमेरिका,

कैनेडा, न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया जैसे मुख्यतः अंग्रेजी भाषी देशों में कितनी बड़ी गिनती में स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं है।

आगे दी जा रही उक्तियां इस विषय पर दुनिया भर में भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुए अध्ययनों से हैं।

''इस तरह मोदिआनो (1968, 1973) की मैक्सीको में की गई खोज, सकतनब-कांगस की फिनलैंड में की गई खोज और उन लातीनी अमेरिकी अध्ययनों, जिनका सारांश गुदशिंसकी (1975) में दिया गया है, के नतीजे मुझे एक-सार लगते हैं। इन अध्ययनों में दिखाया गया है कि उन बच्चों का बड़ा अनुपात जो अपनी शिक्षा स्थानीय भाषा में आरंभ करता है, अपनी मातृ भाषा में साक्षरता का विकास कर लेता है और विषय और दूसरी भाषा पर उन बच्चों से बेहतर महारत हासिल कर लेता है जिनको केवल दूसरी भाषा में पढ़ाया जाता है।'' (Tucker, 1977:3)। (यहां दूसरी भाषा का अर्थ विदेशी भाषा है)।

निम्न उक्ति फिनलैंड से स्वीडन को प्रवास करने वाले बच्चों पर हुए अध्ययन से है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि जिन फिनिश बच्चों की मातृ-भाषा पर महारत बेहतर थी उनकी शिक्षा में प्राप्तियां बेहतर थी, चाहे स्वीडन में शिक्षा स्वीडिश भाषा में दी जाती थी।

''निरीक्षण से यह सामने आया कि फिनिश भाषा में महारत का गणित में प्राप्त अंकों से सीधा सम्बन्ध है। स्वीडिश के मुकाबले फिनिश गणित में प्राप्ति के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण लगती है, चाहे गणित स्वीडिश में पढ़ाया जाता है। नतीजे इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं कि गणित की संकल्पात्मक प्रक्रियाओं के लिए मातृ-भाषा का अमूर्तिकर्ण स्तर महत्वपूर्ण है। जीव-विज्ञान, रसायन विज्ञान और भौतिक-विज्ञान में भी संकल्पात्मक सोच की जरूरत होती है। इन विषयों में भी अपनी मातृ-भाषा पर अच्छी महारत वाले प्रवासी बच्चे उन बच्चों से कहीं बेहतर सफलता हासिल करते हैं जिनकी मातृ-भाषा में महारत अच्छी नहीं होती। (Skutnabb-Kangas और Toukomaa, 1976)'' (Paulston, 1977:94 में उधरित)

अमेरिका के बारे में एक और कथन देखिए :

''ऐसे ही अमेरिका में भी धीरे-धीरे यह समझ पैदा हो गई है कि गैर-अंग्रेजी भाषाई

नागरिकों को अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में डालने और उनकी मातृ-भाषा के विकास पर ध्यान न देने से नतीजे अच्छे नहीं निकलते।'' (Tucker, 1977:3)

घाना में हुए एक अध्ययन में पाया गया कि ''...घाना में केवल 5 प्रतिशत बच्चे सेकन्डरी शिक्षा और जायर में केवल 30 प्रतिशत बच्चे पहली चार जमातें पूरी कर पाते हैं। लेखक इस का कारण शिक्षा के माध्यम की भाषा में महारत न कर पाने को बताते हैं।'' (Tucker, 1977:3)

''यह धारणा भी गलत है कि अगर विद्यार्थी को अंग्रेजी नहीं आती है तो वह विज्ञान और गणित के विषय नहीं सीख पाएगा। क्योंकि, ''विज्ञान के संकल्प किसी एक भाषा या संस्कृति से बंधे नहीं है। रूसी, जर्मन और फ्रांसीसी लोगों को अपनी उच्चतम वैज्ञानिक खोजों पर गर्व है और ये खोजें उन्होंने अंग्रेजी भाषा के बगैर की हैं। 2003 में गणित और वैज्ञानिक अध्ययनों के रूझानों में शिखर पर रहने वाले पांच देश (सिंगापुर, कोरिया गणतंत्र, हांगकांग, चाईना ताएपेई और जापान) वो थे जहां अग्रेंजी प्रथम भाषा नहीं है।'' (Ricardo and Nolasco, 2009:6)

ऐसे ही नार्वे की गलोबल मोनीटरिंग रिपोर्ट (Benson, 2005) में यह ब्यान किया गया है :

''योरूबा माध्यम प्राथमिक शिक्षा प्रोजैक्ट (Fofunwa et al, 1975; Akinnaso, 1993; और हवालों के लिए Adegpiya, 2003 देखिए) से पूरी तरह प्रमाणित हो गया कि मातृ-भाषा माध्यम में पूरे छः साल की पढ़ाई और द्वितीय भाषा अंग्रेजी को एक विषय के रूप में पढ़ाना केवल संभव ही नहीं था बल्कि इससे पूरी पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में कराने से बेहतर नतीजे सामने आए।"

''अभी-अभी के अध्ययन भी यही प्रमाणित करते हैं और मातृ-भाषा आधारित दो भाषाई शिक्षा के साकारात्मक पक्षों को सामने लाने में और भी आगे जाते हैं।'' (Benson, 2005), (मातृ-भाषा आधारित दो-भाषाई शिक्षा का अर्थ यह है कि मातृ-भाषा माध्यम में शिक्षा हो और विदेशी/द्वितीय भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाए)।

इस तरह हम देखते हैं कि पूरी दुनिया में बार-बार यह साबित हो चुका है कि

शिक्षा में जितनी सफलता मातृ-भाषा माध्यम से प्राप्त होती है उतनी सफलता विदेशी भाषा माध्यम से नहीं हो सकती। यह कहना अनुचित नहीं है कि शिक्षा की सफलता केवल मातृ-भाषा माध्यम से ही संभव है। निम्न कथन इसके कुछ कारणों को सामने लाता है।

''बच्चा अपनी बात अपनी भाषा में आसानी से कह सकता है, क्योंकि ऐसे में उसे गलतियाँ करने का डर नहीं होता। मातृ-भाषा आधारित शिक्षा में शिक्षार्थी सीखने की प्रक्रिया में सरगर्म हिस्सा लेते हैं क्योंकि जो उनको बताया जा रहा होता है या जो उनसे पूछा जा रहा होता है उसे वे समझ रहे होते हैं। संकल्पों के सृजन और यथार्थ के विवरण के लिए, अपने विचारों को प्रकट करने के लिए, और जो संकल्प उनके दिमाग का हिस्सा हैं उनमें नए संकल्प शामिल करने के लिए वे मातृ-भाषा का तुरंत प्रयोग कर सकते हैं। मातृ-भाषा आधारित शिक्षा शिक्षकों का शक्तिकर्ण भी करती है, विशेषतः जब वे स्थानीय भाषा में द्वितीय भाषा से ज्यादा पारंगत होते हैं, क्योंकि ऐसे में विद्यार्थी अपने आप को बेहतर प्रकट कर सकते हैं और शिक्षक ज्यादा ठीक ढंग से जान सकते हैं कि विद्यार्थी क्या सीख चुके हैं और कौन से क्षेत्र हैं जहां विद्यार्थी को ज्यादा सहायता की आवश्यकता है। मातृ-भाषा आधारित शिक्षा लोगों के सामूहिक ज्ञान को स्कूल प्रणाली के साथ सम्बद्घ करने के लिए आधार तैयार करती है। मातृ-भाषा आधारित शिक्षा में यह भी संभव होता है कि कोई समूह स्थानीय रचनाकारों, सांस्कृतिक समूहों और दूसरे प्रासंगिक लोगों के साथ मिलकर अर्थपूर्ण शिक्षण सामग्री तैयार कर सके। मातृ-भाषा आधारित शिक्षा माता-पिता का भी शक्तिकर्ण करती है क्योंकि ऐसे में वे अपने बच्चे की शिक्षा में सक्रिय भाग ले सकते हैं, क्योंकि स्कूल की भाषा और समूह की भाषा एक ही होती है।'' (Ricardo and Nolasco (2009))

भाषाविदों और शिक्षाविदों के अनुसार यदि मातृ-भाषा में शिक्षा नहीं होती है तो बच्चा अपने बहुत साल नई भाषा सीखने में ही बर्बाद कर लेता है, क्योंकि ऐसे में ''शिक्षार्थी और शिक्षक का ध्यान भाषा पर ही एकाग्र होगा और विज्ञान, गणित और साक्षरता पर नहीं जाएगा।'' (Ricardo and Nolaso, 2009: 11)

ऊपर हमने देखा है कि दुनिया भर की खोज और विशेषज्ञ इस बात का पक्का प्रमाण पेश करते हैं कि शिक्षा की सफलता केवल मातृ-भाषा माध्यम से ही संभव

है। पर हमारे भारत में शिक्षा और भाषा नीतियों को चलाने वाले आंखों पर अज्ञानता की पट्टी बांधे और कानों में अंग्रेजी रूई के बड़े-बड़े गोले फसाए अंग्रेजी-अंग्रेजी चिल्लाए जा रहे हैं और देश की शिक्षा, भाषाओं और संस्कृति को बर्बादी की पटरी पर सरपट दौड़ाए जा रहे हैं। इस लेख का उद्देश्य इस अज्ञानता को भेदने और इन रूई के गोलों को निकालने का एक विनम्र प्रयत्न है।

अंतर्राष्ट्रीय खोज और विशेषज्ञों के जो निष्कर्ष नीचे दिए जा रहे हैं वे इस अज्ञानता को भेदने में और भी सहायक होंगे, ऐसी मुझे उम्मीद है। यह निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि मातृ-भाषा माध्यम केवल शिक्षा में सफलता के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि विदेशी भाषा सीखने के लिए भी मातृ-भाषा माध्यम में शिक्षा विदेशी भाषा माध्यम में शिक्षा से अधिक सहायक होती है।

III. विदेशी भाषा की पढ़ाई और मातृ-भाषा माध्यम बनाम विदेशी भाषा माध्यम

यूनेस्को की उक्ति से आरम्भ करना ही उचित होगा।

III.1.''मातृ भाषा में शिक्षा और विदेशी भाषा की पढ़ाई - तीन अंध विश्वासों का खण्डन : हमारे रास्ते में बड़ी रुकावट भाषा और शिक्षा के बारे में कुछ अंधविश्वास हैं और लोगों की आंखें खोलने के लिए इन अंध-विश्वासों का भंडा फोड़ना आवश्यक है। ऐसा ही एक अंधविश्वास यह है कि विदेशी भाषा सीखने का अच्छा तरीका यह है कि इसका शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग हो (असल में और भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ना अधिक कारगर होता है)। दूसरा अंधविश्वास यह है कि विदेशी भाषा सीखने के लिए जितना जल्दी शुरू किया जाए उतना अच्छा है (जल्दी शुरू करने से लहजा तो बेहतर हो सकता है पर लाभ की स्थिति में वह होता है जो प्रथम भाषा पर अच्छी महारत हासिल कर चुका हो)। तीसरा अंधविश्वास यह है कि मातृ-भाषा विदेशी भाषा सीखने के रास्ते में रूकावट है (मातृ-भाषा में मजबूत नींव से विदेशी भाषा बेहतर सीखी जाती है)। स्पष्ट है कि ये अंधविश्वास हैं असलियत नहीं, पर फिर भी ये नीति बनाने वालों की इस बात में अगवाई करते हैं कि प्रभुतात्मक भाषा कैसे सीखी जाए।'' (यूनेस्को, 2008:12)

जिस अध्ययन से उपरोक्त कथन लिया गया है वह सभी महाद्वीपों से लिए गए बारह देशों के अध्ययन पर आधारित है और इन देशों में भारत भी शामिल है।

ऐसा ही एक अध्ययन फिनलैंड से स्वीडन जाने वाले बच्चों पर आधारित है। इस अध्ययन में पाया गया कि ''फिनलैंड में कई साल स्कूल जाने की वजह से जितनी किसी विद्यार्थी को फिनिश ज्यादा आती थी उतनी ही बेहतर वह स्वीडिश सीखता था। एक ही माता-पिता के बच्चों की भाषाई महारत के निरीक्षण से पता चला कि जो बच्चे 10 साल की औसत उम्र पर फिनलैंड से आए उन्होंने फिनिश का स्तर भी बरकरार रखा और स्वीडिश भाषा में भी स्वीडिश बच्चों के बराबर का स्तर हासिल किया। जो बच्चे 6 साल से कम उम्र में स्वीडन में आए या जो स्वीडन में ही पैदा हुए, उनके नतीजे अच्छे नहीं थे। ऐसे बच्चों का स्वीडिश भाषा में विकास 12 साल की उम्र में रूक जाता है, क्योंकि स्पष्ट है कि उनकी मातृ-भाषा में नींव पक्की नहीं होती'' (Paulston, 1977:92-93)

सो, स्पष्ट है कि विदेशी भाषा भी मातृ-भाषा के माध्यम में पढ़ने पर विदेशी भाषा में पढ़ने से बेहतर आती है। ऐसा क्यों होता है, यह निम्न कथन से स्पष्ट हो जाएगा :

''बुज़कम (Butzkamm) का आग्रह है कि विदेशी भाषा सीखने और सिखाने में मातृ-भाषा के स्रोत के रूप में दिए जाने वाले योगदान को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है। बच्चे जैसे बड़े होते हैं :

(1) वह यथार्थ को संकल्पित करना सीख चुके होते हैं और भाषा के प्रतीकात्मक कार्य पर उनकी पूरी पकड़ हो चुकी होती है

(2) वह विचारों का आदान-प्रदान करना सीख चुके होते हैं

(3) वह अपनी भाषा में बोलना और उसका प्रयोग करना सीख चुके होते हैं

(4) वह व्याकरण की समझ सहज रूप से प्राप्त कर चुके होते हैं और भाषा के कई सूक्ष्म पक्षों के बारे में चेतन्न हो चुके होते हैं

(5) वह पढ़ने और लिखने के हुनर प्राप्त कर चुके होते हैं : मातृ-भाषा इसी लिए विदेशी भाषा सीखने में सबसे बड़ी पूंजी होती है। इससे भाषा ग्रहण

करने की सहायक प्रणाली प्राप्त होती है और सबसे बड़ी बात कि इससे शिक्षण संभव होता है।''

''सफल शिक्षार्थी मातृ-भाषा के ज़रिए प्राप्त भाषाई हुनर और यथार्थ ज्ञान के बड़े भण्डार को आधार बनाते हैं। मुख्यतः उनके यथार्थ को नई भाषा में फिर संकल्पित करने की आवश्यकता नहीं होती। वह प्रथम भाषा ग्रहण कर चुके होते हैं और इसके साथ ही संवाद के हुनर और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं। उदाहरणार्थ, विनती, इच्छा या चेतावनी के भाव जो सामान्यतः साधारण वाक्यों के जरिए प्रकट नहीं किए जाते ये भाव साधारण वाक्य में भी छुपे हो सकते हैं। और प्रथम भाषा की राह रोशन करने की शक्ति इस तथ्य पर आधारित नहीं होती कि दोनों भाषाओं में व्याकरणिक समानता हो। यह इसलिए है कि सभी भाषाएं अधिकार, गिनती, कर्ता, साधन, निषेध, कारण, शर्त, आवश्यकता जैसे अमूर्त भावों को प्रकट करने की विधियों का विकास कर चुकी होती हैं, वे यह सब चाहे कैसे भी पूरा करती हों। एक भाषा की व्याकरण दूसरी भाषाओं की व्याकरण का दरवाजा खोलने के लिए इसलिए पर्याप्त होती है क्योंकि सभी भाषाओं का संकल्पात्मक आधार एक ही है। गहन अर्थों में हम भाषा एक ही बार सीखते हैं।''
(http://en.wikipedia.org/wiki/WolfgangButzkamm)

अभी तक वर्णित तथ्य भारतीय नीतिवानों की आंखों पर से अंग्रेजी पट्टी और कानों में से अंग्रेजी रूई निकालने के लिए काफी होने चाहिएं पर फिर भी एक नज़र इस पर भी डाल लेनी चाहिए कि बाकी दुनिया में व्यवहार क्या हो रहा है। असलीयत यह है कि जहां कहीं भी अंग्रेजी विदेशी भाषा रही है और इसका प्रयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में होता रहा है वहां यह या तो खत्म हो चुका है या दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। इसे प्रमाणित करने के लिए कुछ मिसालें ही काफी होनी चाहिएं।

युगांडा ने 2007 में तय किया था कि प्राथमिक शिक्षा के पहले तीन साल शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा हो और अंग्रेजी भाषा एक विषय के रूप में पढ़ाई जाए। इससे उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। 2008 में किए गए निरीक्षण में ही पाया गया कि इससे साक्षरता में सुधार हुआ है।

यह ध्यान देने योग्य है कि युगांडा में 52 भाषा समूह हैं। उपरोक्त परिवर्तन इस

विचार पर आधारित है कि यदि विद्यार्थी की मातृ भाषा में नींव रक्खी जा चुकी हो तो वह विदेशी भाषा ज्यादा आसानी से सीखता है। नई नीति से पहले युगांडा में स्कूली शिक्षा आरम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम में होती थी। (उपरोक्त तथ्यों के लिए देखिए Richard M. Kavuma, guardian.co.uk, Friday, 22 May, 2009)

मलेशिया ने 2009 में तय किया था कि गणित और विज्ञान राष्ट्रीय स्कूलों में भाषा मलेशिया में और स्थानीय स्कूलों में चीनी और तमिल में पढ़ाए जाएं। (THE FLACCID MIND, Thursday, July 9, 2009, www)

भारत के नीति निर्माताओं की अज्ञानता पर इससे बड़ी क्या टिप्पणी हो सकती है कि मलेशिया तो तमिल भाषियों को तमिल में विज्ञान पढ़ाना ठीक समझता है पर भारत में यह एक अपराध जैसा है। पंजाबी में कहावत है कि अकल के बिना तो कुएं भी खाली हो जाते हैं। कुओं की बात एक तरफ, पर भारतीय देसी अंग्रेजों के भेजे जरूर खाली हो चुके हैं। खैर, कुछ और मिसालें देना कोई बुरी बात नहीं होगी :

''पिछले कुछ सालों से ईंगलैंड और न्यूज़ीलैंड अपने देशज अल्पसंख्यकों की भाषाओं की ओर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। ...माओरी भाषा और संस्कृति के बारे में न्यूज़ीलैंड के निकट इतिहास को स. मेअ ने आशावादी दृष्टिकोण से अंकित किया है। ...नए माओरी माध्यम वाले प्राथमिक स्कूलों का मूल्यांकन दर्शाता है कि इन बच्चों का शैक्षिक विकास मुख्य धारा वाले बच्चों के बराबर है, बल्कि इसके साथ उनको द्विभाषी होने का लाभ भी है। हांगकांग में पुंतोघुंआ भाषा का प्रयोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। ...मलेशिया ने भी भाषा मलेशिया को राज भाषा और स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम बना दिया है (S. Kaur Gill, pp. 135-152)।'' (Ammon, 2009)

सो स्पष्ट है कि सभी पूर्व अंग्रेजी संक्रमित राष्ट्र इसे अलविदा कहते जा रहे हैं। वजह यह लगती है कि कोई देश भी भारतीयों की तरह अज्ञानता-मित्र नहीं बना रहना चाहता।

पर सोचने वाली बात यह है कि ऐसा क्यों है। इसका असल कारण तो आधुनिक वर्णवाद है जो अंग्रेजी भाषा को हथियार बनाकर हर लाभ को हज्म करना चाहता है। पर उन वैचारिक आधारों को मिटाना जरूरी है जिसका ये अंग्रेजी-मनुवाद

सहारा लेता है। ये आधार कुछ अंधविश्वास हैं जिनका अच्छा वर्णन स्टॉकहोम यूनीवर्सिटी की 2005 में जारी रिपोर्ट में मिलता है। (देखें Benson, 2005)

III.2. भाषा के सम्बन्ध में कुछ और मिथ्या धारणाएं

III.2.1. ''एक राष्ट्र एक भाषा अंधविश्वास :

इस उपनिवेशी संकल्प ने कि किसी राष्ट्र-राज्य को एक साझी भाषा की जरूरत होती है, विश्व के कई हिस्सों में नीतिकारों को प्रभावित किया है। पर न तो एक निष्पक्ष विदेशी भाषा थोपने से कहीं एकता पैदा हुई है और न ही सोमालिया, बरूंदी, खांडा जैसे मुकाबलतन एक भाषाई देशों में स्थिरता पक्की हो सकी है। वास्तव में, बंगलादेश, पाकिस्तान, मियांमार और श्रीलंका जैसे देशों में जातिगत और भाषाई भिन्नताओं को स्वीकार करने में असफलता ही अस्थिरता का बड़ा कारण बना है (Quane, 2003)" । (Benson, 2005)

III.2.2. ''यह अंधविश्वास कि स्थानीय भाषाएं आधुनिक संकल्पों का संचार नहीं कर सकती :

दूसरी भाषाओं के मुकाबले यूरोपीय भाषाओं का जन्मजात सामर्थ्य एक दूसरा उपनिवेशी संकल्प है। पर विश्व की हरेक भाषा अपने वक्ताओं के विचार प्रकट करने में समर्थ है और जरूरत पढ़ने पर नई तकनीकी शब्दावली और संरचनाओं का विकास करने में समर्थ है। इस बात का सबूत एक बार लेओपोलज सेंघर ने आईनस्टाईन के सापेक्षता के सिद्धांत का सेनेगल की भाषा बोलोफ में अनुवाद करके दिया। असल फर्क यह है कि लिखित और प्रकाशन के जरिए बौद्धिकता और विकास के लिए ऐतिहासिक तौर पर एक भाषा का चुनाव किया गया है (Alxandu, 2003) ।" (Benson, 2005)

जैसा उपरोक्त कथन से स्पष्ट है, हर भाषा में यह सामर्थय है कि उसमें किसी भी संकल्प को प्रकट किया जा सकता है। पर इस विषय के बारे में इतनी अज्ञानता का पासार है कि विस्तार में जाना आवश्यक है।

वाक्य संरचना के आधार पर यह बिल्कुल नहीं कहा जा सकता कि कोई भाषा ज्यादा समर्थ है और कोई कम। हर भाषा की वाक्य संरचना थोड़े बहुत अंतर के

साथ एक जैसी ही है। किन्हीं दो भाषाओं का व्याकरण लेकर चंद पन्ने पढ़ने से ही यह स्पष्ट हो जाता है। जिन भाषाओं का कोई व्याकरण न लिखा गया हो उनकी भी वाक्य संरचना वैसी ही समृद्ध होती है जैसी लिखित व्याकरण वाली भाषाओं की। मुसीबत खड़ी करने वाली बात शब्दावली है। अक्सर सुना जाता है कि हमारी भाषाओं के पास विज्ञान और तकनीक जैसे विषयों की शिक्षा के लिए शब्द नहीं हैं। पर यह दृष्टिकोण शत प्रतिशत अज्ञानता पर आधारित है।

असल में हर भाषा का शब्द सामर्थ्य समान होता है क्योंकि हर भाषा की संपूर्ण शब्दावली कुछ मूल तत्त्वों से सृजित होती है और इन मूल तत्त्वों के प्रसंग से भाषाओं में कोई अंतर नहीं है। मिसाल के लिए निम्न अंग्रेजी शब्दों को देखा जा सकता हैः

1. “**Haem**. A prefix signifying blood.
2. **Haemacyte**. A blood cell.
3. **Haemagogue**. Medicine that promotes the catamenial and haemorrhoidal discharges.
4. **Haemal**. Pertaining to the blood.
5. **Haemalopia**. An effusion of the blood into the globe of the eye; bloodshot eye.
6. **Haemngiectasis**. Dilatation of a blood vessel.
7. **Haemangioma**. A malformation of a blood vessels which may occur in any part of the body.
8. **Haemarthrosis**. The presence of blood in a joint cavity.
9. **Haematemesis**. The vomiting of blood.
10. **Haematin**. An iron-containing constituent of haemoglobin.
11. **Haematinic**. An agent improving the blood-quality.
12. **Haematinuria**. The presence of haematin in the urine.

13. **Haematocele**. A swelling filled with blood; haematoma.

14. **Haematocolpos**. Retention of the menses due to a congenital obstruction of vagina.

15. **Haematogenesis**. The development of the blood.

16. **Haematoid**. Having the nature or appearance of blood.

17. **Haematology**. The science dealing with the formation, composition, functions and diseases of the blood.

18. **Haematolysis**. Destruction of blood cells and liberation of haemoglobin.

19. **Haematoma**. The blood tumour; H. Auris, the blood tumour of the external."

(Rawat, 1985 से सधन्यवाद)

देखने से यह लगेगा कि हिन्दी भाषा में इन शब्दों के समानांतर शब्द नहीं है। पर हकीकत यह है कि यह सारे शब्द एक ही धातु 'Haem' (रक्त) के साथ भिन्न-भिन्न उपसर्ग लगाकर बने हैं। नीचे दिए जा रहे इनके हिन्दी समानार्थक स्वयं ही बता देंगे कि चन्द मिनटों में इनके हिन्दी समानांतर प्राप्त हो सकते हैं :

1. रक्त, 2. रक्त-कोशिका, 3, रक्त-प्रेरक, 4, रक्तीय, 5. रक्तीय-नेत्र, 6. रक्तवाहिनी-पासार, 7. रक्त-मस्सा, 8. रक्तजोड़-विकार, 9. रक्त-वामन, 10. लौहरक्तीय, 11. रक्तवर्धक, 12. रक्तमूत्र, 13. रक्त-ग्रन्थि/सूजन, 14. रक्त मासधर्मरोध, 15. रक्त-उत्पादन, 16. रक्तरूप, 17. रक्त-विज्ञान, 18. रक्त-ह्रास, 19. रक्तग्रन्थि।

सो यह कहना कि हमारी भाषाओं में शब्द प्राप्त नहीं हैं किसी की भाषाई अज्ञानता का अच्छा प्रमाण हो सकता है।

उपरोक्त अंग्रेजी शब्द ज्ञान-विज्ञान और अंग्रेजी भाषा के सम्बन्ध में एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने लाते हैं। इन शब्दों में एक भी शब्द अंग्रेजी भाषा का नहीं

है। ये सब लैटिन से सीधे उठाए गए हैं। इसलिए यह समझना भी अतिमूढ़ता है कि यदि आपको अंग्रेजी भाषा आती है तो आपको ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली समझ में आ जाएगी, क्योंकि अंग्रेजी भाषा में ज्ञान-विज्ञान की अधिकतर शब्दावली लैटिन, ग्रीक आदि भाषाओं की है न कि अंग्रेजी की।

एक और मिथ्या धारणा जो अंग्रेजी संक्रमण का कारण बनी हुई है वह यह है कि अंग्रेजी की जानकारी से आपके सामने दुनिया भर के दरवाज़े खुल जाते हैं। इस लिए दुनिया में इस मुहाज पर क्या हो रहा है यह जानना भी जरूरी है।

IV. वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय भाषाई रूझान

वर्तमान समय में विश्व में दो भाषाई रूझान स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं, एक तो अंग्रेजी भाषा का कम हो रहा वर्चस्व और दूसरा गैर-अंग्रेजी भाषाओं का हर क्षेत्र में बढ़ रहा महत्त्व।

हम पहले ही देख आए हैं कि जिन गैर-अंग्रेजी भाषी देशों में भी (महान भारत और इसके पुराने भाई और वर्तमान भूगौलिक और मानसिक पड़ोसी पाकिस्तान को छोड़कर) शिक्षा अंग्रेजी भाषा में दी जाती थी वहां या तो यह खत्म हो रहा है या वहां दिन-ब-दिन अंग्रेजी भाषा शिक्षा के माध्यम के रूप में कम होती जा रही है। दूसरे क्षेत्रों में भी ऐसा ही हो रहा है।

2000 के पास ईंटरनेट पर 80 प्रतिशत से ज्यादा जानकारी अंग्रेजी भाषा में प्राप्त होती थी। अब यह प्रतिशत 40 से भी कम है और अब ईंटरनेट पर सैंकड़ों भाषाओं में जानकारी उपलब्ध है।

भारत की बात भी लें तो माईकरोसाफ़्ट कम्पनी के अनुसार भारत का 95 प्रतिशत व्यापार गैर-अंग्रेजी भाषाओं के माध्यम से होता है और केवल 5 प्रतिशत अंग्रेजी भाषा के माध्यम से।

दुनिया में अंग्रेजी की यह स्थिति बन चुकी है कि आपको केवल अंग्रेजी भाषा आती है और कोई दूसरी भाषा नहीं आती, तो कोई भी कम्पनी आपको सब के बाद नौकरी देगी। निम्न उक्तियां इस बात का प्रमाण हैं कि विश्व की भाषाई दिशा किधर को है :

”आज के कामगारों को अंग्रेजी के अलावा दूसरी भाषाओं में बोल और लिख कर संचार कर सकने के सामर्थ्य की जरूरत है।“ (Stephanie Bell Rose, The Goldman Sachs Foundation, Vishakha Desai, The Asia Society, www से उद्धरित)

‘‘जैसे-जैसे दूसरे देश विदेशी भाषाओं को उत्साहित करने के लिए वित्तीय और नीतिगत कदम उठा रहे हैं, विशेषज्ञों का विचार है कि अमरीकी विद्यार्थी इसमें पीछे रह रहे हैं और विश्वीय मंडी में नुकसान उठा सकते हैं।’’ (Asia Society News, 2nd April, 2009, www.)

‘‘अंग्रेजी ने जो इजारेदाराना स्थिति 20वीं सदी के अंत तक हासिल कर ली थी, 21वीं सदी में ऐसी इजारेदाराना स्थिति किसी भी भाषा की नहीं रहेगी। अंग्रेजी और सूचना तकनालोजी का रिश्ता अल्प-समयक हो सकता है। जैसे पहले अंग्रेजी भाषाई सब से बढ़िया और नई तकनालोजी का लाभ उठाते थे, अब यह सत्य नहीं है।’’ (David Graddol, 2000 (1997)

पूरे विश्व में सभी विकसित देशों के लगभग सभी स्कूलों में मातृ-भाषा के अलावा और भाषाओं की शिक्षा देने का प्रयत्न किया जा रहा है, और ये दूसरी भाषाएं केवल अंग्रेजी नहीं हैं।

आस्ट्रेलिया ने ‘एशियाई अध्ययन पाठ्यक्रम’ प्रोग्राम में तय किया है कि हर स्कूल में एक एशियाई भाषा पढ़ना अनिवार्य होगा (Phillip Coorey, The Sydney Morning Harald, October 29, 2012)

यहां तक कि अमेरिका में चीनी भाषा माध्यम में शिक्षा देने वाले स्कूल खुल गए हैं और इनमें 90 प्रतिशत से ज्यादा विद्यार्थी गैर-चीनी भाषी हैं। (है तो यह नीति भी गलत, पर यह दर्शाता है कि दुनिया में चीनी भाषा का उभार कैसे हो रहा है)। अमेरिका में 2007 में चीनी भाषा सीखने वालों की संख्या 2000 के मुकाबले 10 गुणा थी। (USA Today, 20th November, 2007)

अमेरिका में तो माँ-बाप गैर-अंग्रेजी भाषाएं सीखने में लग रहे हैं, ताकि वो अपने बच्चों की दूसरी भाषाएं सीखने में मद्द कर सकें। (Education Update, 15 March, 2013)

''विश्व अर्थव्यवस्था में चीन के बढ़ रहे प्रभाव को स्वीकार करते हुए, पनामा सभी स्कूलों में चीनी भाषा का शिक्षण अनिवार्य करने की ओर बढ़ रहा है।" (BBC News (www) 6th December, 2007)

यहां तक कि मुख्यतय अंग्रेजी भाषी देशों में भी गैर-अंग्रेजी भाषी लोग अंग्रेजी को त्याग रहे हैं। अमेरिका में 1990 में 3 करोड़ 18 लाख लोगों ने दर्ज कराया था कि वे घर में अंग्रेजी नहीं बोलते। 2000 की जनगणना में यह संख्या 4 करोड़ 70 लाख हो गई थी। यह बढ़ोतरी इन भाषाईयों की आबादी की बढ़ोतरी दर से कहीं ज्यादा है। इन सालों में सपेनी भाषा दर्ज कराने वालों में 60 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। 1980 से 2011 तक अमेरिका में घर में गैर-अंग्रेजी भाषाएं बोलने वालों की गिनती 140 प्रतिशत बढ़ी है। यह आबादी की बढ़ौतरी से कहीं ज्यादा है।

पूर्व अंग्रेजी उपनिवेशों में कैसे अंग्रेजी संचार-तंत्र से भी बाहर हो रही है इसका एक अच्छा प्रमाण अर्जनटीना के ये आंकड़े हैं : 1983 में अर्जनटीना के संचार-तंत्र (media) का 49 प्रतिशत देश के बाहर से था जो 1996 में घटकर 22 प्रतिशत ही रह गया।

अतः कोई संदेह नहीं रह जाता कि जिन क्षेत्रों में पहले अंग्रेजी का वर्चस्व था उन सभी क्षेत्रों में अंग्रेजी दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है।

इस बात पर भी बहुत ध्यान देने की जरूरत है कि अंग्रेजी भाषा के कारण हमारे कितने शैक्षिक, आर्थिक, व्यापारिक और भाषागत नुकसान होते रहे हैं।

V. अंग्रेजी भाषा पर टेक रखने के कुछ और गम्भीर नुकसान

आज विश्व के लगभग सभी देश आवश्यकतावश दूसरे देशों की भाषाएं सीखने में लगते जा रहे हैं पर हम अंग्रेजी की समाधि से चिपके बैठे हैं। हम अंग्रेजी के इलावा किसी भी विदेशी भाषा को सीखने की ओर ध्यान नहीं दे रहे जिससे बहुत बड़ा व्यापारिक और आर्थिक नुक्सान हो रहा है। अगर हम दूसरे देशों की भाषाएं नहीं सीखेंगे तो आने वाले थोड़े ही समय में हम अलग-थलग पड़ जाएंगे। आज हमारे लिए अंग्रेजी से ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीनी और स्पेनी जैसी भाषाएं हैं। पर हम भविष्य तो क्या वर्तमान से भी आंखें मूंदे बैठे हैं। आज दुनिया के लगभग सभी गैर-अंग्रेजी भाषी देश अपने देशों से अंग्रेजी भाषा के प्रभाव को समाप्त करने में

लगे हैं। हम अपनी सारी शिक्षा, संस्कृति, संचार अंग्रेजी भाषा के हवाले किए जा रहे हैं। इससे हमें लाभ कितना हो रहा है यह दर्शाने के लिए भारत का दुनिया के व्यापार में लगातार कम हो रहा हिस्सा जाँच लेना काफी होना चाहिए।

अंग्रेजी भाषा में शिक्षा से हमें कितना फायदा हुआ है यह हमारी उच्च शिक्षा की दशा से ही स्पष्ट हो जाता है। भारत में पिछले 150 साल से उच्च शिक्षा के स्तर पर विज्ञान की शिक्षा अंग्रेजी भाषा में हो रही है। पर हमारा एक भी विश्वविद्यालय विश्व के पहले 200 विश्वविद्यालयों की गिनती में नहीं आता। जापान, चीन, कोरिया, रूस जैसे देश अपनी सारी शिक्षा अपनी भाषाओं में दे रहे हैं, फलस्वरूप उनके विश्वविद्यालयों का स्तर हमारे विश्वविद्यालयों से कहीं बेहतर है। हमारी शिक्षा के घटिया स्तर का सबसे बड़ा कारण शिक्षा का अंगेजी भाषा में होना है।

अंत में एक और तथ्य भारत-स्नेहियों के सामने लाना जरूरी है। आज के युग में किसी भी भाषा का जीवन और विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उस भाषा का प्रयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में हो रहा है कि नहीं। किसी भी भाषा के समाप्त होने में सबसे बड़ा कारण उस भाषा का शिक्षा में प्रयोग न होना है। ''शिक्षा प्रणाली में स्थानीय भाषाओं की गैरहाजिरी के कारण भी भाषाएं मिट जाती हैं। भाषाओं को बचाए रखने और परिणाम स्वरूप उनकी संस्कृति को सुरक्षित रखने में स्कूलों की केन्द्रीय भूमिका होती है। (Eckert, T. et al, 2006)

निम्न उक्ति भाषा के लोप होने की प्रक्रिया को रेखांकित करती है।

''लोग अपनी भाषा बोलने में शर्म महसूस करते हैं और इसकी जगह ऊँचे रूतबे वाली भाषा का प्रयोग करते हैं। परिणामतः उनके बच्चों तक भाषा का संचार नहीं होता। ऐसे, अल्पसंख्यक भाषा को उसके वक्ता बोलना छोड़ देते हैं और सम्बन्धित भाषा के प्रयोग के परिप्रेक्ष्य लगातार घटते चले जाते हैं, जब तक कि नई भाषा इसका पूरी तरह स्थान नहीं ले लेती।'' (McMohan, 1994 : 285)

अगर गौर से देखा जाए तो सभी भारतीय भाषाओं की स्थिति इन मायनों में लगातार बद्तर होती जा रही है।

जब से भारत में स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम का प्रचलन बढ़ा है, उसके बाद की स्थिति का अगर लेखा-जोखा किया जाए तो एक भयावह दृश्य के दर्शन होते हैं।

अंग्रेजी माध्यम के प्रचलन से भाषाई अपंगों की एक पीढ़ी खड़ी हो रही है जो किसी भाषा में पारंगत नहीं है। मातृ-भाषा तो यह पीढ़ी इस लिए अच्छी तरह नहीं सीख पा रही है क्योंकि इसे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाया जा रहा है। इस पीढ़ी के बच्चों की अंग्रेजी का अच्छा विकास इस लिए नहीं हो सकता क्योंकि कोई भी बच्चा जो आरम्भ से ही विदेशी भाषा माध्यम से पढ़ता है उसके भाषागत सामर्थ्य का विकास ही अच्छा नहीं हो पाता। ऐसे में वह कोई भाषा भी अच्छी तरह नहीं सीख पाता।

अंग्रेजी हमारे रास्ते में और विदेशी भाषाएं सीखने में भी बड़ी रूकावट बनी हुई है, जो आज के ज़माने में व्यापार, आर्थिकता, सम्पर्क और जानकारी के लिए निहायत जरूरी है। दुनिया में अंग्रेजी के इलावा दूसरी भाषाएं सीखने का जो तुफान उमड़ा हुआ है और गैर-अंग्रेजी भाषाएं आर्थिक रूप से कितनी महत्त्वपूर्ण बन गई हैं, यह हमारे आधुनिक भारतीय महाराजा लोग देखने में असमर्थ हैं क्योंकि उनकी आँखों पर अंग्रेजी भाषा की पट्टियां बंधी हैं और कानों में अंग्रेजी सिक्के डले हुए हैं। परिणाम, भारतीय शिक्षा, प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति की बर्बादी है। कोई हैरानी की बात नहीं है कि इन सभी आधारों पर भारत दुनिया के बहुत पिछड़े देशों में शामिल है। भारतीय आर्थिक शक्ति और प्रगति का अंदाजा तो विश्व व्यापार में भारत के हिस्से के आंकड़ों से स्पष्ट हो जाना चाहिए जो 1950 में 1.78 प्रतिशत था और आज 1.50 प्रतिशत है। यह प्रतिशत ही इस बात का प्रयाप्त प्रमाण है कि भारतीय नीतिकारों की अंग्रेजी की सवारी 'कानी घोड़ी अँधा सवार' कहावत का जीता-जागता सबूत है।

सांस्कृतिक तबाही की तो बात ही न करें तो अच्छा होगा। एक ऐसी फार्मी पीढ़ी तैयार हो रही है जो न अपनी भाषा, न इतिहास, न साहित्य, न धर्म, न ज्ञान-विज्ञान और न अपने लोगों से कोई गहन सम्बन्ध बना सकती है और न ही कलात्मक सृजन की किसी गहन अनुभूति से आत्मीयता बना सकती है। गुरू नानक ने तब फारसी भाषा की भेड़-चाल में फंसे लोगों को मलेछ भाषा गाहने वाले कहा था। अब जब भारतीय उच्च वर्ग ने बाबा नानक के संदेश को इतना गहरा दफना दिया है तो बेचारे गांधी महात्मा की कौन सुनेगा। वो तो सिर्फ धोती पहनता था, भारतीय संस्कृति को बॉय-बॉय कह कर, टाई-वाई लगाता तो बात और थी।

विनती : यह दस्तावेज वैज्ञानिक भाषा नीति पर मेरी ओर से तैयार की जा रही पुस्तक से अंश लेकर तैयार किया गया है। पुस्तक में थोड़ा समय लग रहा था पर विषय इतना महत्त्वपूर्ण हो गया है कि मैनें समझा कि कुछ अंश लेकर यह दस्तावेज जल्दी भारतीय नागरिकों के सामने लाना चाहिए। इसी लिए यह दस्तावेज हिन्दी में लिखा गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा भारतीय इसे पढ़ पाएं और अपनी-अपनी भाषा में अनुवाद करके यह बातें ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचा पाएं। इस लिए सबसे अनुरोध है कि इसका भिन्न भाषाओं में अनुवाद करें और ज्यादा से ज्यादा लोगों को पढ़ाएं।

इस दस्तावेज में बहुत विद्वानों की बहुत सारी खोजों को उद्धृत किया गया है। उन सब विद्वानों का मैं हार्दिक आभारी हूं। यह उनकी मेहनत और प्रतिबद्धता का नतीजा ही है कि मातृ-भाषाओं को इतना बड़ा वैचारिक आधार मिल पा रहा है।

हवाले :

Ammon, Ulrich. 2009. Book Review. *Medium of Instruction Policies. Which Agenda? Whose Agenda?* by J.W. Tollefson and A.B.M. Tsui (eds). Mahwah, NJ and London: Lawrence, Erlbaum, 2004.

Eckert, T. et al. 2006. Is English a 'killer language', The globalisation of a code. *ethistling.*

Benson, Carol. 2005. *The Importance of Mother Tongue-based Schooling for Educational Quality,*

Commissioned study for EFA Global Monitoring Report. Centre for Research on Bilingualism. Stockholm University.

Graddol, David. *2000 (1997). The Future of English? A Guide to Forecasting the Popularity of the*

English Language in the 21st century. The Bitish Council.

Modiano, N. 1966. *Reading Comprehension in the National Language: A Comparative Study of Bilingual and All Spanish Approaches to Reading Instruction in Selected Indian Schools in the Highlands of Chiapas Mexico*. Ph.D. Dissertation, University of New York.

_____ . 1973. *Indian Education in the Chiapas Highlands*. New York: Holt, Rinchart, and Winston.

Paulston, C.B. 1977. Research In Bilingual Education: Current Perspectives. *Linguistics*. pp. 87-151.

Rawat, P.S. 1985 (1995). *Midline Medical Dictionary*. New Delhi: B Jain Pvt. Publishers Ltd.

RICARDO MA. DURAN NOLASCO. *2009. 21 Reasons why Filipino children learn better while using their Mother Tongue*: *A PRIMER on Mother Tongue-based Multilingual Education (MLE) & Other Issues on Language and Learning in the Philippines.* Guro Formation Forum, University of the Philippines.

Skutnabb-Kangas, T. 1975. Bilingualism, Semi-bilinguism, and Social Achievment. *Paper Presented at the 4th Internaitonal Congress of Applied Linguistics*. Stuttgart.

_____ . and P. Toukomaa. 1976. *Teaching Migrant Children's Mother-Tongue and Learning the Language of the Host Country in the Context of the Socio-cultural Situation of the Migrant Family*. Helsinki: The Finnish National Commission for UNESCO.

Spolsky, B. 1977. American Indian Bilingual Education. *Linguistics* 19:57-72.

Tucker, G.R. 1977. Bilingual Education: Current Perspectives, Vol. 2. *Linguistics*. Arlington, VA : Centre for Applied Linguistics.

UNDP Report. 2004.

Unesco. 1953. *The Use of Vernacular Languages in Education*. Monographs on Fundamental Education, No. 8. Paris.

Unesco. 1968.

Unesco. 2008. *The Improvement in the Quality of Mother Tongue - Based Literacy and Learning*. Bankok: Unesco.